चौ० चरण सिंह, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय

हिसार, हरियाणा

lexz flQkfj'kas
ve:n

उद्यान विभाग, हरियाणा

उद्यान भवन, सेक्टर–21, पंचकुला–134116

दूरभाष नं : 0172–2582322, वेबसाइट : www.hortharyana.gov.in

y?kq d"kd df"k&0;kikj l?k gfj;k.kk ¼lQd½

m|ku Hkou] lsDVj&21] iapdyk&134116] gfj;k.kk

दूरभाष : 0172–2581322, ई–मेल : sfacharyana@gmail.com

वेबसाइट : www.hortharyana.gov.in/en/sfach,

www.sfacharyana.org.in

1.	हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश की गई किस्में	इलाहाबाद सफेदा, सरदार (स.49), हिसार सफेदा, हिसार सुरखा, बनारसी सुरखा

2. मिट्टी के प्रकार : दोमट मिट्टी

3. जलवायु : मध्यम वर्षा वाले क्षेत्र

4. पौध तैयार करना

केवल प्योंदी (ग्राफटिड/कलमी) पौधों को लगाकर ही बाग तैयार करें। बीज से तैयार किए गए पौधें में काफी भिन्नता पाई जाती है।

fof/k

देसी पौधे तैयार करने के लिए सरदार किस्म (स. 49) के बीज प्रयोग में लाएं। बीज को गुद्दा रहित करके धोएं व सुखाएं तथा तुरन्त बिजाई जुलाई–अगस्त या मार्च मे जमीन की सतह से उठी हुई क्यारियों में करें। बिजाई के 6 महीने बाद पौध की दूसरी जगह रोपाई करें। इन पौधों पर पैच बैडिंग/ग्राफटिंग/इनारचिंग जुलाई–अगस्त या फरवरी–मार्च माह में करें।

5. खाद प्रति पेड़ (कि.ग्रा.)

पौधे की आयु (वर्षों में)	गोबर खाद	यूरिया	सुपर फास्फेट	पोटाश्यिम सल्फेट
1	10	0.200	0.200	0.100
2	20	0.400	0.400	0.200
3	30	0.600	0.600	0.300
4	40	0.800	0.800	0.400
5	50	1.000	1.000	0.500
6	60	1.200	1.125	0.500
7	75	1.500	1.250	0.500

6. सूक्ष्म सिंचाई एवं फर्टीगेशन

अ. सारी रुड़ी/ गोबर खाद, आधी सुपर फास्फेट और सल्फेट ऑफ पोटाश फरवरी में देकर बाकी आधी जुलाई में दें। यूरिया आधी फरवरी तथा आधी जुलाई–अगस्त में दें।

ब. खादों का प्रयोग मिट्टी की जांच के आधार पर करें व मुख्य तने से 2–3 फुट की दूरी पर डालें।

7. सिंचाई :

सिंचाई 10–15 दिन के अंतराल पर करते रहें। फूल पड़ने व फल लगने के दौरान सप्ताह में एक बार सिंचाई अवश्य करें।

8. बाग के बीच की फसल :

बाग लगाने के 3–4 साल तक अमरुद के पौधों के बीच में पपीता, दालें जैसे लोबिया और चना आदि ली जा सकती है।

9. फसल प्रबन्ध

वर्षा ऋतु की फसल न लेने के लिए सिंचाई फरवरी से मध्य–मई तक बन्द कर दें। ारदकालीन फसल ही लेनी चाहिए। वर्षा ऋतु की फसल रोकने के लिए बसन्त में आए फूलों को हाथ से तोड़ दें या नेफथलीन एसिटिक एसिड का छिड़काव फरवरी–मार्च में करें। इसके लिए 30 ग्राम नैफथलीन एसिटिक एसिड के पाउडर को 50 मि.ली एल्कोहल या स्पिरिट में घोलकर 100 लीटर पानी में मिलाएं।

10. तुड़ाई का समय

क्लाईमैटरिक (जल्दी खराब होने वाला) फल होने के नाते फल को अपरिपक्व अवस्था में ही तोड़ना चाहिए। तोड़ाई कैंची से थोड़ी सी शाखा व एक–दो पत्ते रखकर करनी चाहिए।

11. डिब्बाबन्दी

अ. पूरी तरह पके हुए फलों को नजदीक की मण्डी में भेजना चाहिए।

ब. दूर दराज की मण्डियों में भेजने के लिए अमरुद को अपरिपक्व अवस्था में, जब फल हरे रंग का हो, तोड़ना चाहिएऔरलकड़ी के डिब्बों में पैक करना चाहिए।

12. भण्डारण

गर्मियों में फलों को जल्दी बाजार में भेज देना चाहिए जबकि सर्दियों में हरी अवस्था में अपरिपक्व फल 2–3 दिन का स्थानान्तरण समय सहन कर सकते हैं।

13. हानिकारक कीड़ेः

		कीड़े व लक्षण	रोकथाम एवं सावधानियां
क.	फल मक्खियां	इसका प्रकोप जुलाई से सितम्बर तक अधिक होता है। इसके प्रौढ़ घरेलू मक्खी के जैसे होते हैं। मादा मक्खी फलों में छेद करके छिलके के नीचे अण्डे देती है। जिन फलों पर अण्डे दिए जाते हैं उन पर बहुत छोटे छिद्र गहरे हरे रंग के दिखाई देते हैं।	 1. जहां तक सम्भव हो वर्षाकालीन फसल न लें क्योंकि इस समय फल – मक्खी द्वारा नुकसान अधिक होता है। 2. मक्खी–ग्रसित फलों को प्रतिदिन इकट्ठा करें व जमीन में 2 फुट गहरा दबा दें या भेड़–बकरियों को खिला दें। 3. ग्रीष्मकाल में जमीन की खुदाई करें ताकि फल मक्खी के प्यूपा मरजाएं। 4. 500 मि.ली. मैलाथियान (सायथियान) 50 ई.सी. + 5 किग्रा. गुड़ या चीनी को 500 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ छिड़कें। अगर प्रकोप बना रहता है तो छिड़काव 7 से 10 दिन के अन्तर पर दोहराएं। नोटः मैलाथियान दवाई छिड़कने के 5 दिन तक फलों को न तोड़ें। 5. फेरोमोन ट्रैपस 10 प्रति एकड़ लगायें।
ख.	छाल खाने वाली सूण्डी	अमरुद के ईलावा यह कीट सभी फलदार, छायादार व अन्य पेड़ों को नुकसान पहुंचाता है। यह कीट प्रायः दिखाई नहीं देता। परंतु जहां पर टहनियां अलग होती हैं। वहां पर इसका मल व लकड़ी का बुरादा जाले के रुप में दिखाई देते है। दिन के समय इस कीट की सूंडी तने के अन्दर सुरंग बनाती है और रात को छेद से बाहर निकलकर जाले के नीचे रहकर छाल को खाती हैं एवं खुराक नली को खाकर नष्ट कर देती हें जिससे पौधों के दूसरे भागों में पोषक तत्व नहीं पहुंच पाते हैं। जिन बागों की देखभाल नहीं होती उनमें पुराने वृक्षों पर इसका आक्रमण अधिक होता है। एक वर्ष में इस कीट की एक ही पीढ़ी होती है जो जून–जुलाई से शुरु होती है।	 कीटनाशक दवाइयों का प्रयोग, जाले हटाने के बाद ही करें। 1. सितम्बर–अक्तूबरः 10 मि. ली. मोनोक्रोटोफॉस (नुवाक्रान) 36 डब्ल्यू.एस.सी. या 10 मि. ली. मिथाइल पैराथियान (मैटासिड) 50 ई.सी. को 10 लीटर पानी में मिलाकर, सुराखों के चारों ओर की छाल पर लगाएं। 2. फरवरी–मार्चः रूई के फोहों को दवाई के घोल में डुबोकर किसी धातु की तार की सहायता से कीड़ों के सुराख के अन्दर डाल दें एवं सुराख को गीली मिट्टी से ढक दें। घोल बनाने के लिए 40 ग्राम कार्बेरिल (सेविन) 50 घुलनशील पाउडर या 10 मि.ली. फैनिट्रोथियान (फोलिथियान/सुमिथियान) 50 ई.सी. को 10 लीटर पानी में मिला दें। 10 प्रतिशत मिट्टी के तेल का इमल्शन (एक लीटर मिट्टी का तेल + 100 ग्राम साबुन + 9 लीटर पानी) भी लगा सकते हैं। अथवा कीड़े के प्रत्येक सुराख में निम्नलिखित दवाइयों में से किसी एक का पानी में बनाया गया 5 मि.ली. घोल डाल दें। इसके लिए 2 मि. ली. डाईक्लोरवॉस (नुवान) 76 ई.सी. या 5 मि.ली. मिथाइल पैराथियान (मैटासिड) 50 ई.सी. को 10 लीटर पानी में मिलाएं तथा इसके बाद सुराखों को मिट्टी से बन्द कर दें। नोटः 1. आसपास के सभी वृक्षों के सुराखों में भी इन दवाइयों का प्रयोग करें। 2. बग को साफ–सुथरा रखें व निर्धारित संख्या से ज्यादा पेड़ न लगाएं।

ग.	स्केल कीट और मिलीबग	यह कीट छोटे गोल व पीले भूरे या हल्के भूरे रंग के होते हैं तथा सफेद मोम जैसे चूर्णी पदार्थ से ढके होते हैं। ये कीट मीठा रस छोड़ते है जिससे चीटिंया आकर्षित होती हैं और फंफूदी भी लग जाती है। इसका प्रकोप फरवरी–मार्च से अक्तूबर–नवम्बर तक अधिक रहता है। अमरुद की कलमी जातियां व नवजात पौधे इस कीट से ज्यादा क्षतिग्रस्त होते हैं।	स्केल कीटों से क्षतिग्रस्त वृक्षों पर 1.25 लीटर डाइजिनान (बासुडीन) 20 ई.सी. या 500 मि.ली. मिथाइल पैराथियान (मैटासिड) 50 ई.सी. को 500 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ मार्च और सितम्बर में छिड़कें। क्षतिग्रस्त टहनियों को काटकर नष्ट कर दें।
14.	बिमारियां व उसके लक्षण:		
		बीमारी व लक्षण	रोकथाम
क.	उखेड़ा रोग	जड़ों के रोगग्रस्त होने के काफी समय बाद लक्षण दिखाई देते हैं। रोगग्रस्त पौधों में पत्तियां बहुत कम हो जाती हैं अथवा सारी पत्तियां पीली पड़ती हैं और बाद में पौधा सूखने लगता है।	पौधे उन्हीं खतों में लगाएं जहां पानी के निकास की अच्छी व्यवस्था हो। बहुत अधिक भारी मिट्टी में पौधे न लगाएं। वर्षा या सिंचाई में पानी को तने के चारों ओर खड़ा न होने दें। रोगग्रस्त पौधों को जड़ सहित उखाड़कर नष्ट कर दें। गड्ढे को फारमैलिन के द्वारा धूमित करने के बाद ही दोबारा पौधा लगाएं। हर पौधें के थाले में 15 ग्राम बाविसिटिन मार्च, जून व सितम्बर में डालकर पानी लगा दें तथा मार्च व सितम्बर में पौधों पर 0.3 प्रतिशत जिंक सल्फेट का छिड़काव करें।
ख.	फल गलन या टहनी मार रोग	फलों में संक्रमण होने के फलस्वरुप बनते हुए फल छोट, कड़े और काले रंग के होते हैं या कई बार लक्षण बहुत देर से दिखाई देते हैं। फल पकने वाली अवस्था में फलों के ऊपर गोलाकार एक या अनेक धब्बे बनते हैं जोकि बाद में आपस में मिलकर धंसे हुए दिखाई देते हैं तथा नारंगी रंग के फफूंद उत्पन्न हो जाते हैं। डालियों पर यदि संक्रमण हो जाए तो डालियां या शाखाएं पीछे से सूखने लगते हैं।	रोगाग्रस्त डालियों को काटकर 0.3 प्रतिशत कॉपर ऑक्सीक्लोराइड के घोल का छिड़काव करें और 15 दिन की अवधि पर फल लगने के बाद 2–3 छिड़काव करें।
ग.	आल्टरनेरिया लीफ स्पॉट	पत्तियों की ऊपर भूरे या गहरे रंग के धब्बे बनते हैं। रोगाग्रस्त पत्तियां झुलसी हुई दिखाई पड़ती है और बाद में गिर जाती है। यह रोग आल्टरेनयिा नामक फफूंद द्वारा होता है।	रोकथाम के लिए कॉपर ऑक्सीक्लोराइड नाम दवा के 0.2 प्रतिशत घोल का छिड़काव 2 सप्ताह के अन्तर पर 2–3 बार करें।